Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

هُوَالَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الَّیۡلَ
لِتَسۡکُنُوۡا فِیۡہِ وَالنَّھَارَ مُبۡصِرًا
اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّسۡمَعُوۡنَ

(सूरः यूनुस **: 68**)

अनुवाद : वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम इस में संतोष पाओ और दिन को रोशन करने वाला बनाया। निसन्देह इस में ऐसे लोगों के लिए बहुत से निशानात हैं जो (बात) सुनते हैं।

वर्ष- 9
अंक - 21

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

14 शवाल, 05 जुल्कादह 1445 हिज्री कमरी, 23 हिज्रत 1403 हिज्री शम्सी, 23 मई 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

दाई ओर वाला पहले होता है

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे घर में आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पानी मांगा। हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए अपनी एक बकरी दोही फिर मैं ने (दूध) में अपने कुवें का पानी मिलाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाएं तरफ़ थे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने और एक बदवी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दाहेनी तरफ़। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पी चुके तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना बचा हुआ बदवी को दिया और उसके बाद फ़रमाया जो दाहिनी तरफ़ है वही मुक़द्दम होगा। तुम लोग दाहिनी तरफ़ से ही शुरू किया करो। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत यही है।

(बुख़ारी भाग 4 किताबुल हब्बिया)

गोह का हलाल होना परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का खाने से मना करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है, उन्होंने कहा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़ाला हज़रत उम्मे हुदैफिया रज़ियल्लाहु अन्हो ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पनीर और घी और गोह (छिपकली के मुशाबेह मगर बड़ा एक जानवर) बतौर उपहार भेजी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पनीर और घी से कुछ तनावुल फ़रमाया और गोह कराहत के कारण छोड़ दी। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे मगर वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दस्तर-ख़्वान पर खाई गई और अगर हराम होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दस्तर-ख़्वान पर नहीं खाई जाती।

(बुख़ारी भाग 4 किताब हल् बिया बाब क़बूलुल् हदीया)

★ ★ ★

इस वक़्त हमारे लोगों को ऐसे ही सब्र करना चाहिए जैसा कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके अस्हाब ने मक्का में किया

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

शेख़ रहमतुल्ला साहिब का ख़त बिना किसी रुकावटके हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुंचा, जिस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"मैं इस इबतेला में उनके लिए बहुत दुआ करता हूँ। इस से मुझे बहुत ख़ुशी हुई। वास्तव में इबतेला बड़ी रहमत का मूजिब होते हैं कि एक तरफ़ उबूदियत मुज़्तर हो कर और चारों तरफ़ से कट कर उसी अकेले सबब साज़ की तरफ़ मुतवज्जा हो जाती है और इधर से उलूहियत अपने फ़ज़लों के लश्कर लेकर उसकी तसल्ली के लिए क़दम बढ़ाती है। मैं हमेशा ये सुन्नत अंबिया अलैहिस्सलाम और अल्लाह की सुन्नत में देखता हूँ कि जिस क़दर उस गरामी जमाअत की करुणा और रहमत आज़माइश के वक़्त अपने ख़ुद्दाम की निसबत जोश मारती है, आराम-ओ-आफ़ियत के वक़्त वह हालत नहीं होती।"

हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने क़बल अज़ नमाज़ ज़ुहर बड़ी लतीफ़ तक़रीर फ़रमाई और मौलाना अब्दुल करीम साहिब से संबोधित हो कर फ़रमाया कि :

"जो कुछ हो रहा है इरादा इलाही के मुवाफ़िक़ हो रहा है। ज़रूरी था कि ये लोग अपने हाथों से उन आसार की सदाक़त पर मोहर लगा देते जिनमें लिखा है कि महदी मौऊद के वक़्त बड़ा शोर बरपा होगा और आगले और पिछले ज़माने के बुजुर्गों के अक़ायद के ख़िलाफ़ बातें बनाने वाला कह कर काफ़िर ठहराया जाएगा। इस वक़्त हमारे अहबाब को ऐसा ही सब्र करना चाहिए जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्हाब ने मक्का मुअज़्ज़मा में क्या कोई हरकत उनसे ऐसी सरज़द नहीं हुई जो उन्हें हुक्काम तक पहुंचाती। इस वक़्त किसी पर भरोसा न करें कि अमुक व्यक्ति हमारी मदद करेगा। याद रखें उस वक़्त सर्वशक्तिमान ख़ुदा के सिवा कोई सहायक नहीं होगा।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 4 से 5 प्रकाशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

यह कितना महत्वपूर्ण स्थान है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हासिल है कि : दो हज़ार वर्ष पहले अल्लाह तआला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को हुक्म देता है कि मेरे इस घर को साफ़ करो, क्योंकि यहां मेरा वह नबी आने वाला है जिस के नूर से सारी दुनिया चमक उठेगी।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः अल् हज आयत नंबर : 27
وَاِذۡ بَوَّاۡنَا لِاِبۡرٰہِیۡمَ مَکَانَ الۡبَیۡتِ اَنۡ لَّا تُشۡرِکۡ بِیۡ شَیۡـًٔا وَّطَہِّرۡ بَیۡتِیَ لِلطَّآئِفِیۡنَ وَالۡقَآئِمِیۡنَ وَالرُّکَّعِ السُّجُوۡدِ
की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

फ़रमाता है कि याद रखो कि हमने इस घर की तामीर इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माना से शुरू की है। और इस तालीम से शुरू की है कि इस के साथ ताल्लुक़ रखने वाले लोग शिर्क न करें और मुसाफ़िरों और इस घर के पास रहने वालों और रुकु करने वालों और सजदा करने वालों के लिए इस घर को पाक रखें।

इन आयात से ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से जिस क़ुर्बानी का मुतालिबा किया था और जिसके अधीन वह अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को एक सुनसान और वीरान वादी में छोड़ कर चले

शेष पृष्ठ12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि जब मुझे शुहदा-ए-उहद याद आते हैं तो ख़ुदा की क़सम मुझे यह इच्छा होती है कि काश मैं भी अपने साथियों के साथ पहाड़ के दर्रे में ही रह गया होता

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलामत देख लिया है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समझें कि मैं ने मुसीबत को भून कर खा लिया

अगर प्रगति देखनी हैं तो हमें भी वह ईमान पैदा करना होगा, जज़्बा पैदा करना होगा और इख़लास-ओ-वफ़ा पैदा करनी होगी

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ और बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान हों जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सलामत हैं तो कोई मरे मुझे क्या परवाह है।
मुझे तो केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी की ज़रूरत थी। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवित हैं तो मुझे किसी और की वफ़ात की चिंता नहीं।
आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि .. जिस ने यह कलमा पढ़ लिया मुझे ऐसे व्यक्ति के क़तल से मना किया गया है

ग़ज़व-ए-उहद में सहाबा और सहाबियात रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की जाँनिसारी और शुहदा-ए-अहद के बुलंद स्थान का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

फ़लस्तीन और दुनिया के बिगड़ते हालात तथा यमन के असीरान की रिहाई के लिए दुआ की तहरीक

फ़लस्तीन और दुनिया के हालात के लिए भी दुआएं जारी रखें। बद से बद तर हालात होते चले जा रहे हैं संभावना है कि ईरान पर भी हमला हो और फिर जंग बढ़ कर और फैले। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

श्रीमान मुस्तफ़ा अहमद ख़ान साहिब पुत्र हज़रत नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु तथा डाक्टर मीर दाऊद अहमद साहिब आफ़ अमरीका की वफ़ात पर उनका उनकी विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 अप्रैल 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

रमज़ान से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात का वर्णन हो रहा था और इस हवाले से जंग-ए-उहद के वाक़ियात में वर्णन कर रहा था। जिस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के बारे में भी वर्णन था। आज भी इस हवाले से वर्णन करूँगा।

रिवायत में आता है हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की माता आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घोड़े पर सवार थे और हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु घोड़े की लगाम पकड़े हुए थे। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको देखकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी माता हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनको स्वागतम कहो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी वजह से अपना घोड़ा रोक लिया यहां तक कि वह क़रीब आकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखने लगीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके बेटे हज़रत अम्र बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत पर ताज़ियत फ़रमाई तो उन्होंने कहा जब मैंने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सही सलामत देख लिया तो बस अब मेरी मुसीबत और ग़म ख़त्म हो गया

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्म-ए-साद रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया हे उम्म-ए-साद! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो और सब शहीदों के घर वालों को भी ख़ुशख़बरी दे दो कि इन सब के मक़्तूलीन जन्नत में एक दूसरे के साथी हैं और सबने अपने अपने घर वालों के लिए अल्लाह तआला से शफ़ाअत और सिफ़ारिश की है। अर्थात यह जो शहीद थे उन्होंने अपने घर वालों के लिए भी अल्लाह तआला के हुज़ूर सिफ़ारिश की है। हज़रत उम्म-ए-साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम सब राज़ी और ख़ुश हैं और इस ख़ुशख़बरी के बाद भला उन पर कौन रो सकता है। क्या मुक़ाम है उनके ईमान और अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी होने का। फिर उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सब शहीदों के पीछे रहने वालों के लिए दुआ करें। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब शुहदा-ए-उहद के घर वालों के लिए दुआ

करते हुए फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ أَذْهِبْ حُزْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاجْبُرْ مُصِيْبَتَهُمْ، وَأَحْسِنِ الْخَلَفَ عَلٰى مَنْ خُلِّفُوْا۔

हे अल्लाह उनके दिलों से दुख और पीढ़ा को मिटा दे। उनकी मुसीबतों को दूर फ़र्मा दे और शहीदों के जो जांनशीन हैं उन्हें उनका बेहतरीन जांनशीन बना दे। (सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 345 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो अहल मदीना के फ़िदाईत का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद के मैदान से वापस तशरीफ़ लाए तो मदीना की औरतें और बच्चे शहर से बाहर इस्तक़बाल के लिए निकल आए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनी की बाग एक पुराने और बहादुर अंसारी सहाबी साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने पकड़ी हुई थी और वह गर्व से आगे आगे चले आ रहे थे। शहर के पास उन्हें अपनी बुढ़िया माँ जिसकी नज़र कमज़ोर हो चुकी थी आती हुई मिली। उहद में उसका एक बेटा भी मारा गया था। इस बुढ़िया की आँखों में मोतियाबिंद उतर रहा था और इस की नज़र कमज़ोर हो चुकी थी। वह महिलाओं के आगे खड़ी हो गई और इधर-उधर देखने लगी और मालूम करने लगी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहाँ हैं? साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने समझा कि मेरी माँ को अपने बेटे के शहीद होने की ख़बर मिलेगी तो उसे सदमा होगा। इसलिए उन्होंने चाहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे हौसला दिलाएँ और तसल्ली दें। इसलिए जूंही उनकी नज़र अपनी माता पर पड़ी उन्होंने कहा, हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी माँ या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी माँ! "अर्थात दो दफ़ा बताया कि मेरी माँ आ रही है। "आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।" वहां रुक के, "बी-बी बड़ा अफ़सोस है कि तेरा एक लड़का इस जंग में शहीद हो गया है। बुढ़िया की नज़र कमज़ोर थी इसलिए वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुख को न देख सकी। वह इधर-उधर देखती रही। अंततः उसकी नज़र आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरा पर टिक गई। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब आई और कहने लगी हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! जब मैंने आपको सलामत देख लिया है तो आप समझें कि मैं ने मुसीबत को भून कर ख़ा लिया।

अब देखो वह औरत जिसके बुढ़ापे में बुढ़ापे की लाठी टूट गई थी। किस बहादुरी से कहती है कि मेरे बेटे के ग़म ने मुझे क्या खाना है। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा हैं तो मैं इस ग़म को भून कर खा जाऊँगी। मेरे बेटे की मौत मुझे मारने का कारण नहीं होगी बल्कि यह ख़्याल कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के सिलसिला में मेरे बेटे ने अपनी जान दी है मेरी ताकत को बढ़ाने का कारण होगा।"

(करूँने-उला की मुस्लमान ख़वातीन,अनवारुल उलूम भाग 25 पृष्ठ 441)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसी तरह की एक और घटना वर्णन करते हुए अहमदी औरतों से पूछा कि क्या तुम्हारे अन्दर दीन का वही जज़्बा भरा है? फिर यह वाक़िया वर्णन करने के बाद अहमदी महिलाओं को संबोधित करके फ़रीज़-ए-तब्लीग़ पर तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाया कि यही वह महिलाएं थीं जो इस्लाम की इशाअत और तब्लीग़ में मर्दों के साथ-साथ चलती थीं और यही वे महिलाएं थीं जिनकी क़ुर्बानियों पर इस्लामी संसार गर्व करता है। तुम्हारा भी दावा है अर्थात जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वाली औरतें हैं यह तुम्हारा भी दावा है कि तुम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाई हो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बरूज़ हैं मानों दूसरे शब्दों में तुम सहाबियात की बरूज़ हो लेकिन तुम सही तौर पर बताओ कि क्या तुम्हारे अन्दर दीन का वही जज़्बा भरा है जो सहाबियात में था? क्या तुम्हारे अन्दर वही नूर मौजूद है जो सहाबियात में था। क्या तुम्हारी औलादें वैसी ही नेक हैं जैसी सहाबियात की थीं? अगर तुम ग़ौर करोगी तो तुम अपने आप को सहाबियात से बहुत पीछे पाओगी। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि उनकी क़ुर्बानियां जो उन्होंने अपनी जान पर खेल कर कीं अल्लाह तआला को ऐसी प्यारी लगीं कि अल्लाह तआला ने बहुत जल्द उनको कामयाबी अता की और दूसरी क़ौमें जिस काम को सदियों में नहीं कर सकीं उनको सहाबा और सहाबियात ने चंद वर्षों के अंदर कर के दिखाया। (उद्धृत फ़रीज़-ए-तब्लीग़ और अहमदी महिलाओं, अनवारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 400-401)

अतः अगर प्रगति देखनी हैं तो हमें भी वह ईमान पैदा करना होगा, जज़्बा पैदा करना होगा और इख़लास-ओ-वफ़ा पैदा करनी होगी। कुछ वाक़ियात का जबकि पहले मुख़्तसर वर्णन हो चुका है जैसे यह जो वाक़िया मैंने वर्णन किया उसका भी मुख़्तलिफ़ हवालों से वर्णन हुआ है लेकिन यह ऐसे वाक़ियात हैं जो बार-बार और मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में सुनकर एक अजीब ईमान की कैफ़ीयत और जोश पैदा करते हैं। विशेषता जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं तो केवल वाक़िया के तौर पर नहीं बल्कि एक वसीअ तनाज़ुर में यह वाक़ियात हमारे सामने आते हैं।

ऐसे ही क़ुरून-ए-ऊला की महिलाओं के वाक़ियात का वर्णन करते हुए एक अवसर पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि "उहद का मैदान मदीना से आठ नौ मेल के फ़ासिला पर था। जब मदीना में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की ख़बर पहुंची तो औरतें बे-तहाशा रोती और बिलबिलाती हुई शहर से बाहर निकल आएं और मैदान-ए-जंग की तरफ़ दौड़ पड़ीं। अक्सर औरतों को रस्ता में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सलामती की ख़बर मिल गई और वे वहीं ठहर गईं परंतु एक औरत दीवाना-वार उहद तक जा पहुंची। इस औरत का पति, भाई और बाप उहद में मारे गए थे और कुछ रिवायतों में है कि एक बेटा भी मारा गया था। जब वह मुस्लमान लश्कर के क़रीब पहुंची तो उसने एक सहाबी से दरयाफ़्त किया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? चूँकि ख़बर देने वाला रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से मुतमइन था इसलिए उसने इस औरत से कहा। बी-बी अफ़सोस है कि तुम्हारा बाप इस जंग में मारा गया है। इस पर इस औरत ने कहा तुम अजीब हो। मैं तो पूछती हूँ कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? और तुम यह ख़बर देते हो कि तेरा बाप मारा गया है। इस पर इस सहाबी ने कहा बी-बी मुझे अफ़सोस है कि तेरा ख़ावंद भी इस जंग में मारा गया है। इस पर औरत ने फिर कहा मैंने तुमसे अपने ख़ावंद के विषय में दरयाफ़्त नहीं किया। मैं तो यह पूछती हूँ कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? इस पर इस सहाबी ने उसे फिर कहा। बी-बी मुझे अफ़सोस है कि तेरा भाई भी इस जंग में मारा गया है। इस औरत ने बड़े जोश से कहा मैंने तुमसे अपने भाई के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त नहीं किया। मैं तो तुमसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में पूछ रही हूँ। तुम यह बताओ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? जब लोगों ने देखा कि उसे अपने बाप, भाई और ख़ावंद की मौत की कोई पर्वा नहीं। वह केवल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ैरीयत दरयाफ़्त करना चाहती है तो वह उसके सच्चे जज़्बात को समझ गए और उन्होंने कहा बी-बी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो ख़ैरीयत से हैं। इस पर उसने कहा मुझे बताओ वह कहाँ हैं? और फिर दौड़ती हुई उस तरफ़ गई जहां रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े थे और वहां पहुंच कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दो ज़ानू हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दामन पकड़ कर कहने लगी।

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी माँ और बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान हों जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सलामत हैं तो कोई मरे मुझे क्या पर्वा है। मुझे तो केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी की ज़रूरत थी। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवित हैं तो मुझे किसी और की वफ़ात का परवाह नहीं।"

आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "अब देखो इस औरत को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किस क़दर इशक़ था। लोग उसे एक के बाद एक बाप, भाई और पति की वफ़ात की ख़बर देते चले गए लेकिन वह जवाब में हर दफ़ा यही कहती चली गई कि मुझे बताओ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उद्देश्य यह भी एक औरत ही थी जिसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस क़दर इशक़ का मुज़ाहरा किया।"

(करूँ-ए-उला की मुस्लमान ख़वातीन, अनवारुल उलूम भाग 25 पृष्ठ 439 से 440)

फिर क़ुरून-ए-ऊला की मुस्लमान औरतों के बारे में जंग-ए-उहद में ही जंग के बाद के हालात का नक़्शा खींचते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत और सहाबा और सहाबियात के आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़-ओ-मुहब्बत को वर्णन करते हुए दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन में आप

रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूं लिखा है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि "जब इस्लामी लश्कर वापस मदीना की तरफ़ लौटा तो उस वक़्त तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत और इस्लामी लश्कर की परागंदगी की ख़बर मदीना पहुंच चुकी थी। मदीना की औरतें और बच्चे दीवाना-वार उहद की तरफ़ दौड़े जा रहे थे। अक्सर को तो रास्ता में ख़बर मिल गई और वह रुक गए, प रं तु बनू दीनार क़बीला की एक औरत दीवाना-वार आगे बढ़ते हुए उहद तक जा पहुंची। जब वह दीवाना-वार उहद के मैदान की तरफ़ जा रही थी इस औरत का ख़ावंद और भाई और बाप उहद में मारे गए थे और कुछ रिवायतों में है कि एक बेटा भी मारा था।" पहली रिवायत भी है "जब उसे उसके बाप के मारे जाने की ख़बर दी गई तो उसने कहा मुझे बताओ कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? चूँकि ख़बर देने वाले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से संतुष्ट थे वह बारी-बारी उसे उसके भाई और ख़ावंद और बेटे की मौत की ख़बर देते चले गए परंतु वह यही कहती चली जाती थी مَا فَعَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या किया? बज़ाहिर यह फ़िक़रा ग़लत मालूम होता है।' आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं यह फ़िक़रा ग़लत मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या-किया "और इसी वजह से लेखकों ने लिखा है कि इस का अर्थ यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या हुआ।' अर्थात वह दूसरी तरफ़ ले गए "लेकिन हक़ीक़त यह है' आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं लेकिन हक़ीक़त यह है "कि यह फ़िक़रा ग़लत नहीं बल्कि औरतों के मुहावरा के अनुसार बिल्कुल दरुस्त है। औरत के जज़्बात बहुत तेज़ होते हैं और वह बसा-औक़ात मर्दों को ज़िंदा समझ कर कलाम करती है। जैसे कई औरतों के ख़ावंद या बेटे मर जाते हैं तो उनकी मौत पर उनसे मुख़ातब हो कर वह इस किस्म की बातें करती रहती हैं कि मुझे किस पर छोड़ चले हो? या बेटा इस बुढ़ापे में मुझसे क्यों मुँह मोड़ लिया? यह शिद्दत-ए-ग़म में फ़ितरत-ए-इन्सानी का एक निहायत लतीफ़ मुज़ाहरा होता है। इसी तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की ख़बर सुन कर उस औरत का क्या हाल हुआ। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़ौत शुदा मानने के लिए तैयार नहीं थी और दूसरी तरफ़ इस ख़बर की तरदीद भी नहीं कर सकती थी। इसलिए शिद्दत-ए-ग़म में यह कहती जाती थी अरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क्या-किया। अर्थात ऐसा वफ़ादार इन्सान हमको यह सदमा पहुंचाने पर क्योंकर राज़ी हो गया। जब लोगों ने देखा कि उसे अपने बाप, भाई और ख़ावंद की कोई परवाह नहीं तो वह उस के सच्चे जज़्बात को समझ गए और उन्होंने कहा। अमुक की अम्मां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो जिस तरह तू चाहती है ख़ुदा के फ़ज़्ल से ख़ैरीयत से हैं। इस पर उस ने कहा मुझे दिखाओ वे कहाँ हैं? लोगों ने कहा कि आगे चली जाओ वह आगे खड़े हैं। वह औरत दौड़ कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंची। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामन को पकड़ कर बोली। हे अल्लाह के रसूल! मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान हों, जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सलामत हैं तो कोई मरे मुझे कोई परवाह नहीं।" आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं देखो "मर्दों ने जंग में वह नमूना ईमान का दिखाया और औरतों ने यह नमूना इख़लास का दिखाया, जिसकी मिसाल मैंने अभी वर्णन की है। ईसाई दुनिया मर्यम मगद लेनी और उसकी साथी औरतों की इस बहादुरी पर ख़ुश हैं कि वह मसीह क़ब्र पर सुबह के वक़्त दुश्मनों से छुप कर पहुंची थीं। मैं उनसे कहता हूँ आओ और ज़रा मेरे महबूब के मुख़लिसों और फ़िदाइयों को देखो कि किन हालतों में उन्होंने उसका साथ दिया और किन हालतों में उन्होंने तौहीद के झंडे को बुलंद किया। .. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शुहदा को दफ़न करके मदीना वापस गए तो फिर औरतें और बच्चे शहर से बाहर इस्तक़बाल के लिए निकल आए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनी की बाग साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना के रईस ने पकड़ी हुई थी' पहले भी वर्णन हुआ है यह वाक़िया "और फ़ख़र से आगे आगे दौड़े जाते थे। शायद दुनिया को यह कह रहे थे कि देखा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ैरियत से अपने घर वापस ले आए हैं।" यह अपना अंदाज़ है एक वर्णन का। "शहर के पास उन्हें अपनी बुढ़िया माँ जिसकी नज़र कमज़ोर हो चुकी थी आती हुई मिली। उहद में इस का एक बेटा अम्र बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी मारा गया" था जिसकी तफ़सील मैं ने पहले भी वर्णन की है।".. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। माई मुझे तुम्हारे बेटे की शहादत पर तुमसे हमदर्दी है' जब उस को देखा। "इस पर नेक औरत ने कहा। हुज़ूर जब मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलामत देख लिया तो समझो कि मैंने मुसीबत को भून कर खा लिया।

"मुसीबत को भून कर खा लिया" क्या अजीब मुहावरा है। मुहब्बत के कितने गहरे जज़्बात पर दलालत करता है। गम इंसान को खा जाता है वह औरत जिसके बुढ़ापे में उसकी बुढ़ापे की लाठी टूट गया किस बहादुरीसे कहती है कि मेरे बेटे के ग़म ने मुझे क्या खाना है जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा हैं तो मैं इस ग़म को खा जाऊँगी।

मेरे बेटे की मौत मुझे मारने का मूजिब नहीं होगी बल्कि यह ख़्याल कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए उसने जान दी मेरी क़ुव्वत के बढ़ाने का मूजिब होगा।" यह जज़्बा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो अंसार के हक़ में दुआ देते हुए और अपने जज़्बात का इज़हार करते हुए फ़रमाते हैं कि "हे अंसार मेरी जान तुम पर फ़िदा हो, तुम कितना सवाब ले गए।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल अलूम भाग 20 पृष्ठ 255 से 257)

मदीने के मुनाफ़ेक़ीन और यहूद का तर्ज़-ए-अमल और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के जोश पर जो उनके रिवायत के ख़िलाफ़ था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या उस्वा था। लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़ व-ए-उहद के बाद मदीना पहुंचे तो मुनाफ़ेक़ीन और यहूद ख़ुशियां मनाने लगे और मुस्लमानों को बुरा-भला कहने लगे और कहने लगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बादशाहत के तलबगार हैं, नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) और आज तक किसी नबी ने इतना नुक़्सान नहीं उठाया जितना उन्होंने उठाया है। ख़ुद भी ज़ख़्मी हुए और उनके सहाबा भी ज़ख़्मी हुए और कहते थे कि अगर तुम्हारे वे लोग जो क़तल हुए हमारे साथ रहते तो कभी क़तल नहीं होते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उन मुनाफ़ेक़ीन के क़तल की इजाज़त चाही जो इस तरह ये बातें कर रहे थे अर्थात मुनाफ़ेक़ीन। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या वह इस शहादत का इज़हार नहीं करते कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं? ला इलाहा इल्लल्लाह नहीं पढ़ते? और मैं अल्लाह का रसूल हूँ और मुहम्मद रसूलुल्लाह नहीं कहते? कलिमा तो पढ़ते हैं फ़रमाया कि कलिमा तो पढ़ते हैं ये लोग? इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया क्यों नहीं। निसन्देह पढ़ते हैं। ये तो कहते हैं लेकिन मुनाफ़िक़ाना बातें भी साथ कर रहे हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा लेकिन ये तलवार के ख़ौफ़ से इस तरह कहते हैं। साथ यह भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि तलवार के ख़ौफ़ से ये इस तरह करते हैं। कलिमा पढ़ रहे हैं या मुहम्मद रसूलुल्लाह कह रहे हैं। अतः उनका मुआमला अब ज़ाहिर हो गया है और अब जब उनके दिल की बात निकल गई है और अल्लाह ने उनके केनों को ज़ाहिर कर दिया है तो फिर उनसे इंतेक़ाम लेना चाहिए, उनको सज़ा देनी चाहिए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे उस के क़तल से मना किया गया है जो इस शहादत का इज़हार करे

(अल् सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 348 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

जो ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह कहे मुझे उस के क़तल से मना किया गया है। जिसने यह कलिमा पढ़ लिया मुझे ऐसे व्यक्ति के क़तल से मना किया गया है। यह उन तथा कथित उल्मा का मुँह-बंद करने के लिए भी काफ़ी है जो अहमदियों के बारे में बावजूद उसके कि अहमदी दिल से यह कलिमा पढ़ते हैं और मुनाफ़क़त की हल्की सी भी बू हमारे अंदर नहीं है। ये लोग, ये उल्मा कहते हैं कि ये काफ़िर हैं और उनका क़तल जायज़ है और कुछ शहादतें इसी तरह हुई हैं। यही उल्मा, ये तथा कथित उल्मा हैं जिन्हों ने इस्लाम को बदनाम किया हुआ है।

उहद के शुहदा के जनाज़े पढ़ने के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं उन्हें में वर्णन भी कर चुका हूँ लेकिन यहां सही बुख़ारी के हवाले से वर्णन करना चाहता हूँ जिससे ग़ज़वा उहद में शामिल होने वाले सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के मुक़ाम-ओ-मर्तबा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उनके लिए दुआ का पता चलता है। हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ साल बाद उहद के शहीदों पर नमाज़ जनाज़ा पढ़ी। ज़िंदों और मुर्दों को अल्-विदा करने वाले की तरह। इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मंच पर चढ़े और फ़रमाया

: मैं तुम्हारे आगे मार्गदर्शक हूँगा और मैं तुम पर गवाह हूँगा और तुमसे मिलने की जगह हौज़ है और मैं उसे अपने इस खड़े होने की जगह से देख रहा हूँ। और तुम्हारे बारे में मुझे यह डर नहीं कि तुम शिर्क करोगे लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में दुनिया का डर है कि तुम उसके लिए एक दूसरे का मुक़ाबला करने लगो।

(सही अल्बख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी बाब अहद हदीस 4042) और बाद के वाक़ियात ने ये साबित भी किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह डर भी सही था।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम्हारे भाई उहद में शहीद हुए अल्लाह ने उनकी रूहों को सबज़ परिंदों के पेट में रखा। वे जन्नत की नहरों पर उतरते उसके फल खाते और अर्श के साय में लटकी हुई सोने की क़ंदीलों में बसेरा करते। जब उन्होंने अपनी पसंद और मर्ज़ी का खा लिया और पी लिया और अपनी मर्ज़ी का आराम किया तो उन्होंने कहा हमारे भाईयों को कौन पहुंचाएगा कि हम जन्नत में ज़िंदा हैं और हमें रिज़्क़ दिया जाता है ताकि वह जिहाद से बे गुंबती न करें और जंग के वक़्त कील कांटे न लें, पीछे न हटें। तो अल्लाह सुबहांनहु ने कहा मैं तुम्हारी तरफ़ से उनको पहुंचा देता हूँ। फ़रमाया फिर अल्लाह ने यह आयत नाज़िल की وَلَا تَحۡسَبَنَّ الَّذِيۡنَ قُتِلُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَمۡوَاتًا ۔ (आले इमरान : 170) वे लोग जो अल्लाह की राह में मारे गए हैं उनको मुर्दा न समझो। (सुंन अबी दाऊद किताब 2520 فى فضل الشهادة)

कई दफ़ा लेखकों ने, लिखने वाले या कई हदीस वर्णन करने वाले भी यह तो हर बात पर कह देते हैं कि ज़रूरी नहीं है कि आयत की वजह नुज़ूल यही हो। इस से पहले भी हर शहीद के बारे में, बदर के शुहदा का बहुत बड़ा मुक़ाम था उनके बारे में भी बल्कि सूरः बकरः में भी यह है।

फिर एक रिवायत मिलती है हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि जब मुझे शुहदाए उहद याद आते हैं तो ख़ुदा की क़सम मुझे यह ख़्वाहिश होती है कि काश मैं भी अपने साथियों के साथ पहाड़ के दर्रे में ही रह गया होता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि मैं उनके साथ शहीद हो जाता

(अल् मुस्तदरक अलल्ल् सहीहैन भाग 5 पृष्ठ 1627 किताब अल् मग़ाज़ी वल् सिराय हदीस 4318 मक्कतबा नज़ार मुस्तफ़ा2000 ई.)

अब्दुल्लाह बिन अबी फ़रवाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के शुहदा की क़ब्रों की ज़यारत की तो फ़रमाया। اَللّٰهُمَّ إِنَّ عَبۡدَكَ وَنَبِيَّكَ يَشۡهَدُ أَنَّ هٰؤُلَاءِ شُهَدَاءُ، وَأَنَّهُ مَنۡ زَارَهُمۡ وَسَلَّمَ عَلَيۡهِمۡ إِلٰى يَوۡمِ الۡقِيَامَةِ رَدُّوۡا عَلَيۡهِ ۔ हे अल्लाह बे-शक मैं तेरा बंदा और नबी गवाही देता हूँ कि ये लोग शहीद हैं और जो उनकी ज़यारत करे और क़ियामत के दिन तक उन पर सलाम भेजे तो वह उस का जवाब देंगे।

(अल् मुस्तदरक अलल्ल् सहीहैन भाग 5 पृष्ठ 1627-1628 किताब अल् मग़ाज़ी वल् सिराया हदीस 4320 मक्तबा निज़ार मुस्तफ़ा 2000 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग उहद के शोहदा के लिए फ़रमाया। هٰؤُلَاءِ أَشۡهَدُ عَلَيۡهِمۡ ۔ । ये वे लोग हैं जिनका मैं गवाह हूँ। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या हम उनके भाई नहीं हैं। हम मुस्लमान हुए जैसे वे मुस्लमान हुए और हमने जिहाद किया जैसे उन्होंने जिहाद किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ मगर मुझे मालूम नहीं कि मेरे बाद तुम क्या करोगे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रोने लगे और अर्ज़ किया कि हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ज़िंदा रहेंगे? (अल् मोअत मालिक पृष्ठ 282किताब الجهاد باب الشهداء فى سبيل الله हदीस 1004 प्रकाशन दारुल फिक्र बेरूत) इस ग़म से ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु रोने लगे कि शायद हमारी ज़िंदगी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा लंबी है।

अब्बाद बिन अबी सालेह से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर वर्ष के शुरू में शुहदाए उहद की क़ब्रों की ज़यारत को तशरीफ़ ले जाते तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते। سَلَامٌ عَلَيۡكُمۡ بِمَا صَبَرۡتُمۡ فَنِعۡمَ عُقۡبَى الدَّارِ ۔ सलामती हो तुम पर बसबब उसके जो तुमने सब्र किया अतः क्या ही अच्छा है घर का अंजाम। रावी कहते हैं कि फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनकी ज़यारत करने जाते थे।

(तारीख़ मदीना मुनव्वरः भाग 1 पृष्ठ 85-86 हदीस 381 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि "ज़माना वफ़ात के क़रीब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विशेषतः शुहदा-ए-उहद पर जनाज़ा की नमाज़ अदा की और बड़े दर्द-ए-दिल से उनके लिए दुआ फ़रमाई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद के शुहदा को ख़ास मुहब्बत और एहतेराम से देखते थे। एक दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद के शुहदा की क़ब्रों के पास से गुज़रे तो फ़रमाया ये वे लोग हैं जिनके ईमान का मैं शाहिद हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या हम उनके भाई नहीं हैं? क्या हमने उन्ही की तरह इस्लाम क़बूल नहीं किया-क्या हमने उन्ही की तरह ख़ुदा के रस्ते में जिहाद नहीं किया? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। "हाँ लेकिन मुझे क्या मालूम है कि मेरे बाद तुम क्या-क्या काम करोगे।" इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु रो पड़े और बहुत रोए और अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ज़िंदा रह सकेंगे? "यह तसव्वुर ही हमें मारने वाला है। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो लखते हैं कि "सहाबा भी उहद के शुहदा की बड़ी इज़्ज़त करते थे और उहद की याद को एक मुक़द्दस चीज़ के तौर पर अपने दिलों में ताज़ा रखते थे। इसलिए एक दफ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने इफ़तारी का खाना आया जो ग़ालिबन किसी क़दर पुर्तकलफ़ था। इस पर उन्हें उहद का ज़माना याद आगया जब मुस्लमानों के पास अपने शुहदा को कफ़नाने के लिए कपड़ा तक नहीं था और वह उनके बदनों को छिपाने के लिए घास काट काट कर उन पर लपेटते थे और इस याद ने अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को ऐसा बेचैन कर दिया कि वह बे-ताब हो कर रोने लग गए और खाना छोड़कर उठ खड़े हुए हालाँकि वो रोज़े से थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम. ए. पृष्ठ : 502)

शुहदाए उहद के लवाहेक़ीन से दिलजोई के वाक़ियात और शुहदा के बच्चों से मुहब्बत के इज़हार का भी वर्णन मिलता है। हज़रत बिश रज़ियल्लाहु अन्हो वालिद हज़रत अकऱ्बा रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन जंग उहद के शुहदा में वर्णन हुआ है। कई ने हज़रत बिशर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम बशीर भी वर्णन किया है। जब अकऱ्बा रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हो गए तो उनके बेटे बिश्रान के पास बैठे रो रहे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। इस اُسۡكُتۡ، اَمَا تَرۡضٰى اَنۡ اَكُوۡنَ اَنَا أَبُوۡكَ وَعَائِشَةُ اُمُّكَ ۔ चुप हो जाओ, क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं हो कि मैं तुम्हारा बाप बन जाता हूँ और आयशा तुम्हारी माँ बन जाती है। बिशर ने कहा क्यों नहीं मैं बिलकुल राज़ी हूँ। उनका पुराना नाम बहीरा था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका नाम बशीर रख दिया। और उनकी ज़बान में लुक्नत थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके मुँह पर दम किया तो लुक्नत जाती रही। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके सिर पर अपना दस्त-ए-मुबारक भी फेरा। जब वह उम्र रसीदा हो गए तो सारा सिर सफ़ेद हो गया मगर जिस जगह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना दस्त मुबारक फेरा था इस जगह के बाल बदस्तूर काले ही रहे। उन्होंने लंबी उम्र पाई। फ़लस्तीन में 85 हिज्री में फ़ौत हुए।

(इन्साईकलोपीडीया भाग 6 पृष्ठ 357 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)(उद्धृत अल् असाब भाग 4 पृष्ठ 437 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)(उद्धृत ओसोदुल गाबा भाग 1 पृष्ठ 388 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से दिलजोई का वाक़िया मिलता है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिले तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हे जाबिर क्या बात है मैं तुम्हें ग़मगीं देख रहा हूँ। मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे वालिद ग़ज़ व-ए-उहद में शहीद हो गए और वह क़र्ज़ और औलाद छोड़ गए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की ख़ुशख़बरी न दूं जिससे अल्लाह ने तुम्हारे वालिद से मुलाक़ात की है। मैंने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह ज़रूर दें। आप

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ने किसी से कलाम नहीं किया परंतु पर्दे के पीछे से। जिस से भी अल्लाह तआला ने कलाम किया पर्दे के पीछे से किया लेकिन अल्लाह तआला ने तुम्हारे वालिद को ज़िंदा किया और फिर उनसे आमने सामने हो कर कलाम किया और फ़रमाया हे मेरे बंदे मुझ से मांग कि मैं तुझे दूं। उन्होंने अर्ज़ की कि हे मेरे रब मुझे दुबारा ज़िंदा कर दे ताकि मैं तेरी राह में दुबारा क़तल किया जाऊं। एक रिवायत में है कि इस अवसर पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ की कि हे मेरे रब मैंने तेरी इबादत का हक़ अदा नहीं किया मेरी तमन्ना है कि तू मुझे दुबारा दुनिया में भेज ताकि मैं तेरे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हो कर तेरी राह में लड़ूँ और तेरी राह में दुबारा मारा जाऊं। इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं यह फ़ैसला कर चुका हूँ कि जो एक-बार मर जाएं वह दुनिया में दुबारा नहीं लौटाए जाएंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाह तआला से अर्ज़ की कि हे मेरे रब मेरे पीछे रहने वालों तक यह बात पहुंचा दे। इस अवसर पर फिर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ (आले इमरान : 170) अर्थात जो अल्लाह की राह में मारे गए तुम उन्हें हरगिज़ मुर्दा न समझो बल्कि वह तो ज़िंदा हैं उन्हें उनके रब के हाँ रिज़्क़ अता किया जा रहा है। (सुंन अल् तिरमेज़ी अबवाब तफ़सीरुल क़ुरआन बाब व मिन सूरह आले इमरान हदीस 3010) (दलायल नब्विया अज़ बीहक़ी भाग 3 पृष्ठ 298 दारुल अरयान अल् तुर्रास काहिरा 1988 ई.)(अल् इस्तेयाब भाग 3 पृष्ठ 955 -956 दारुल जलील बेरूत)

बहरहाल जैसा कि पहले भी मैंने कहा। यह सही है कि नहीं कि यह आयत की वजह नुज़ूल है या नहीं लेकिन यह बात बहरहाल सही है कि शुहदा ज़िंदा हैं जो मरने के फ़ौरन बाद ही जन्नत के आला दर्जे और मुक़ाम पा लेते हैं।

अल्लाह तआला के हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो से मुकालमा वाले वाक़िया की तफ़सील हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे अपनी एक तक़रीर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के हवाले से वर्णन की थी कि जिस में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से ताल्लुक़ का इज़हार होता है। और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत और अल्लाह तआला की उन पर प्यार की नज़र किस तरह पड़ती थी, यह वर्णन करते हुए आप कहते हैं कि "इस वाक़िया में तरह तरह का हुस्न कूट कूट कर भरा हुआ है और जिस करवट से उसे देखें ये एक नई रानाई दिखाता है। मिनजुमला और उमूर के इस से हमें पता चलता है कि किस तरह मुसलसल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का संपर्क अपने रब से क़ायम था। बंदों पर भी नज़र-ए-शफ़क़त फ़र्मा रहे थे और रब से भी दिल मिला रखा था। एक पहलू अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो पर झुका हुआ था तो दूसरा पहलू अल्लाह से जुड़ा और पैवस्ता था। वह वजूद जो अमन की हालत में ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى (अल् नजम : 9) के उफ़ुक़-ए-आला पर फ़ायज़ रहा, जंग की हालत में भी एक लम्हा इस से अलग न हुआ। एक निगाह मैदान-ए-हर्ब की निगरान थी तो दूसरी जमाल-ए-यार के नज़ारा में व्यस्त थी। एक कान रहमत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ झुका हुआ था तो दूसरा अल्लाह से अपने रब का शीरीं कलाम सुनने में व्यस्त। दस्त-ए-बाकार था तो दिल-ए-बायार। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबह रज़ियल्लाहु अन्हो की दिलदारी फ़रमाते थे तो ख़ुदा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दिलदारी फ़र्मा रहा था। अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की कलबी कैफ़ीयत की ख़बर देकर दरअसल अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह पैग़ाम दे रहा था कि हे सबसे बढ़कर मुझसे मुहब्बत करने वाले! देख तेरा भी कैसा इशक़ हमने अपने आरिफ़ बंदों के दिल में भर दिया है कि आलिम गुज़रां से गुज़र जाने के बाद भी तेरा ख़्याल उन्हें सताता है।"वहीं उन्होंने मुतालिबा किया था कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जा के दुबारा लड़ूँ दुश्मन के ख़िलाफ़"और तुझे मैदान-ए-जंग में तन्हा छोड़ के चले जाने पर किस दर्जा कबीद-ए-ख़ातिर हैं। तेरे मुक़ाबिल पर उन्हें जन्नत की भी हिर्स नहीं रही। उनकी जन्नत तो बस यही है कि तेज़ तलवारों से बार-बार काटे जाएं, मगर तेरे साथ रहें, फिर तेरे साथ रहें, फिर तेरे साथ रहें।"

(ख़िताबात-ए-ताहिर (तक़ारीर जलसा सालाना क़बल अज़ ख़िलाफ़त) तक़रीर जलसा सालाना 1979 ई., पृष्ठ 349-350)

बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा पेश करूँगा।

फ़लस्तीन और दुनिया के हालात के लिए भी दुआएं जारी रखें। बद से बदतर हालात होते चले जा रहे हैं। ख़दशा है कि ईरान पर भी हमला हो और फिर जंग वसीअ हो कर मज़ीद फैले। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए। यमन में कुछ असीरान की रिहाई हुई है। कल ही ये ख़बर आई है बल्कि अक्सरियत की रिहाई हो गई है। बाक़ी जो कुछ रह गए हैं उनकी रिहाई के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हुक्काम के दिल उनकी तरफ़ से साफ़ करे। विशेषता जो एक ख़ातून सदर लजना हैं वह असीरी में हैं अल्लाह तआला उनकी जल्द रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए।

नमाज़ के बाद में दो जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। इस में जो पहला जनाज़ा है उनका थोड़ा वर्णन कर दूं। यह श्रीमान मुस्तफ़ा अहमद ख़ान साहब हैं जो हज़रत नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत नवाब अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा के बेटे थे पिछले दिनों वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे छोटे नवासे थे। सबसे छोटी बेटी अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा के सबसे छोटे बेटे थे। इस तरह आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे छोटे नवासे थे। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। 1966 ई. में सूई नार्दर्न गैस कंपनी में बतौर सीनीयर जनरल मैनेजर मुलाज़मत शुरू की और इसके बाद फिर रिटायरमैंट के बाद भी दुबारा इस कंपनी के डायरेक्टर बन गए। 74 में हालात ख़राब हुए तो कंपनी ने आपको बिल्कुल एक तरफ़ कर दिया और जो अच्छा सही काम था वह नहीं देते थे। इस पर उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह से मश्वरा किया तो उन्होंने फ़रमाया कि हालात दुरुस्त हो जाएंगे, फ़िक्र न करो और तुमने उधर ही रहना है और फिर बाद में अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया और फिर हालात उनके हक़ में हुए।

ग़रीबों का बड़ा ख़्याल रखने वाले थे। रिश्ते निभाने वाले थे। दो शादियां थीं। पहली शादी उनकी हुई। उनकी वह अहलिया वफ़ात पा गई थीं तो फिर उन्होंने दूसरी शादी उनकी छोटी बहन से की। उनके जो पहले बच्चे थे इन बच्चों को भी उन्होंने अपने बच्चों की तरह रखा और अपनी बहनों की तहरीक पर ये दूसरी शादी उन्होंने की और फिर ख़ूब निभाया दूसरी शादी को भी। उनकी दूसरी अहलिया लिखती हैं। दूसरी अहलिया भी पहली बीवी की छोटी बहन थीं और पहले शादीशुदा थीं उनकी दो बेटियां भी थीं जैसा कि मैंने कहा। फिर तलाक़ हो गई। फिर काफ़ी देर उन्हों ने बच्चियों को ख़ुद पाला लेकिन बहरहाल फिर उनसे शादी हुई। यह लिखती हैं कि ग़ैर मुस्लिमों से भी बहुत हुस्न-ए-सुलूक था। एक हिंदू बचा था सिंध में। उस की तालीम का ख़र्च उठाया और उसे पढ़ाया लिखाया और यहां तक पढ़ाया कि वह अस्सिटैंट कमिशनर बन गया और हमेशा यही कहता था कि मुझे मुस्तफ़ा ख़ान साहब की वजह से यह मुक़ाम मिला है। बहरहाल वह तो अल्लाह का फ़ज़्ल था। बहुत ग़रीब पर्वर थे। अपने माता पिता के नाम से नासिरा बाद फ़ार्म में एक ट्रस्ट भी बनाया था जो फ़ार्म उनके वालिद की तरफ़ से विरासत में मिला था। ज़मिनों के साथ ही क्लीनिक भी बनाया हुआ था और बाक़ायदगी से फ्री मैडीकल कैंप भी वहां मुनाक़िद होते थे। डाक्टर अब्दुल्मनान शहीद साहिब भी इस मैडीकल कैंप में जाया करते थे। क्लीनिक के लिए बाहर से कभी किसी से मुतालिबा नहीं किया। अपने ज़राए से ही इस का ख़र्च पूरा करते थे। मेहमान-नवाज़ी भी उनमें बहुत थी। उनके वालिद साहिब हज़रत नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहब भी बहुत मेहमान नवाज़ थे, उनकी तरफ़ से आई है। बच्चों से भी बहुत प्यार का रिश्ता था। हर रिश्ता बहुत अच्छी तरह निभाया। उनकी दूसरी पत्नी ने लिखा है। उनके अर्थात दूसरी पत्नी के बच्चों, बेटियों का भी अपनी बेटियों की तरह ख़्याल रखा। बच्चों को समझाने में अगर सख़्ती करनी पड़े तो करते थे लेकिन फिर बात समझाते थे।

डाक्टर ख़ालिद तस्लीम साहिब जो उनके भांजे हैं कहते हैं इंतेहाई नाफ़े इन्सान थे। सोई गैस के महिकमे में अच्छे ओहदे पर फ़ायज़ थे और किसी को कोई काम पड़ता तो इसको इन्कार नहीं किया करते थे। विशेषतः ग़रीबों का बहुत ख़्याल रखते थे। कहते हैं मिर्ज़ा हनीफ़ अहमद साहिब ने एक दफ़ा कहा कि उनके पास किसी ग़रीब आदमी को किसी काम के लिए भेजो तो वह उसका काम ज़रूर कर

देते हैं। रब्वाह में भी बहुत सारे ग़रीब घरों में रसोई गैस लगवाने में उन्होंने काफ़ी मदद की है।

35 साल पहले उन्हें कैंसर का मर्ज़ लाहक़ हो गया था। बड़ा ऑप्रेशन भी करना पड़ा। इस की वजह से उनकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में काफ़ी मुश्किलात भी दरपेश थीं लेकिन इसके बावजूद उनके चेहरे से बशाशत नहीं गई और मेहमान-नवाज़ी और लोगों के काम आने में कोई फ़र्क़ नहीं आया। हल्क़ा-ए-अहबाब भी उनका बहुत वसीअ था। जमाअत के मुख़ालेफ़ीन भी उनकी बहुत इज़्ज़त और एहतेराम करते थे और उनसे मिलते थे क्योंकि एहसान करने वाले थे। हर एक पर एहसान करते थे। कोशिश में रहते थे किसी का एहसान न लें बल्कि दूसरे को ज़ेरे एहसान करें और अगर कभी कोई थोड़ा सा एहसान कर भी देता था तो उसके फिर बड़े ममनून-ए-एहसान थे।

मैं ने भी उनमें यह सब ख़ूबियां देखी हैं। ग़रीबपर्वर भी थे। बेहतरीन बेटे थे जिन्हों ने सबसे बढ़कर अपनी माँ की ख़िदमत की। बहन भाईयों में सबसे छोटा होने के बावजूद सबसे बड़ा बन के दिखाया।

विरासत की ज़मीन का मुशतर्का इंतेज़ाम उनकी माता हज़रत नवाब अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनके सपुर्द किया तो उसे भी उन्होंने बहुत आला तरीक़े से निभाया। इस में इंतेज़ामी काम किए और इस फ़ार्म को बहुत ऊंचा कहीं से कहीं पहुंचा दिया। इसी वजह से उनके बहन भाई भी आप पर बहुत एतेमाद करते थे। इसके इलावा वहां के ग़रीब मज़दूरों का भी बहुत ख़्याल रखा करते थे। बहरहाल बहुत अच्छे ख़ावंद, बहुत अच्छे बेटे, बहुत अच्छे बाप और भाई थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा ग़ायब जो पढ़ूँगा वह डाक्टर मीर दाऊद अहमद साहिब मरहूम का है। यह अमरीका में थे। पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। डाक्टर मीर मुश्ताक़ अहमद साहिब और बिल्क़ीस बेगम साहिबा के बेटे थे। उनकी शादी श्रीमाना अमतुल बसीर साहिबा से हुई जो हज़रत मियां अबदुर्रहमान अहमद साहिब और साहबज़ादी अमतुल रशीद बेगम साहिबा की बेटी थीं। हज़रत साहबज़ादी अमतुल रशीद बेगम हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी थीं इस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पोती और यह पड़ नवासे बनें। साहबज़ादी अमतुल रशीद साहिबा हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो की नवासी थीं

डाक्टर दाऊद साहिब ने यूनीवर्सिटी आफ़ इंजनीयरिंग ऐंड टैक्नोलोजी लाहौर से ग्रेजवाएशन की। फिर अमरीका चले गए। वहां से उन्होंने पी.एच. डी की। इसके बाद वर्ल्ड बैंक में मुलाज़मत की। 35 वर्ष तक बहैसीयत सीनीयर डेवेलपमंट प्रोफ़ैशनल और बतौर इंतेहाई आला सलाहियत के प्रैक्टीशनर के ख़िदमात सरअंजाम देते रहे। आपने मुख़्तलिफ़ देशों में विशेषता एशिया में बड़े पैमाने पर बैनुल अक़वामी प्रगति और तरक़्क़ीयाती मन्सूबों पर काम किया। अमरीका की जमाअत के भी शुरू के मैंबरों में से थे। 1970 की दहाई में लंगर ख़ाने की टीम में भी अपनी डयूटी दिया करते थे बावजूद इसके कि एक आला अफ़्सर थे। इस के इलावा कई साल तक नैशनल सैक्रेटरी जायदाद अमरीका के तौर पर भी काम बजालाए। हमेशा निहायत जोश और दीनी जज़्बे से काम किया करते थे। मस्जिद बैत अल् रहमान की तामीर और विशेषतः तौसीअ के काम में उन्होंने बहुत काम किया। बावजूद उसके कि बड़े अच्छे ओहदे पर फ़ायज़ थे बड़ी आजिज़ी से जमाअती ख़िदमात अंजाम दिया करते थे। चीन में भी रहे हैं। उस वक़्त के मुरब्बी ने मुझे लिखा जब वहां तालीम हासिल कर रहे थे कि न मुसायद हालात के बावजूद चीन में भी इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने की कोशिश करते रहते थे। निहायत आजिज़ाना तबीयत के मालिक थे। हर छोटे बड़े से तवाज़ो और ख़ुश-दिल्ली से मिलते थे। जहां तक संभव हो हर मुम्किन माली इमदाद करने के लिए भी तैयार रहते थे। मेहमान-नवाज़ी उनका ख़ास वस्फ़ था। अपनों और ग़ैरों पर शफ़क़त बला इमतेयाज़ थी। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान 27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलगम इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दहेज़ का प्रदर्शन एक ग़लत रस्म है

हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"शादी ब्याह के अवसर पर कुछ फ़ुज़ूल किस्म की रस्में हैं, जैसे बरी को दिखाना या वह सामान जो दूलहा वाले दूल्हन के लिए भेजते हैं इस का इज़हार, फिर जहेज़ का इज़हार, बाक़ायदा नुमाइश लगाई जाती है। इस्लाम तो केवल हक़ महर के इज़हार के साथ निकाह का ऐलान करता है, बाक़ी सब फ़ुज़ूल रस्में हैं। एक तो बरी या दहेज की नुमाइश से उन लोगों का उद्देश्य जो साहब-ए-तौफ़ीक़ हैं केवल बढ़ाई का इज़हार करना होता है कि देख लिया हमारे शरीकों ने भाई बहन या बेटा बेटी को शादी पर जो कुछ दिया था हमने देखो किस तरह इस से बढ़कर दिया है। केवल मुक़ाबला और नुमाइश है .. केवल रस्मों की वजह से,अपनी नाक ऊंचा रखने की वजह से ग़रीबों को मुश्किलात में, कर्ज़ों में ना गिरफ़्तार करें और दावा यह है कि हम अहमदी हैं और बैअत की दस शरायत पर पूरी तरह अमल करेंगे .. जबकि बैअत करने के बाद तो वे यह अहद कर रहा है कि संसारिक लोभ और लालच से बाज़ आजाएगा और अल्लाह और उसके रसूले सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हुकूमत मुकम्मल तौर पर अपने ऊपर तारी कर लेगा। अल्लाह और रसूले करीम हम से क्या चाहते हैं,यही कि रस्म और रिवाज और संसारिक लोभ और लालच छोड़कर मेरे अहकामात पर अमल करो।"

(शरायत-ए-बैअत और अहमदी की ज़िम्मेदारियाँ, पृष्ठ 101 से 103)

(विभाग रिश्ता नाता, नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया कादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing
Electrician
Welding
Motor Vehicle
AC & Refrigerator
Diesel Mechanic
Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198

(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

परमाणु विकिरण के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए होम्योपैथिक उपचार

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने परमाणु विकिरण से बचने के लिए बचाव के तौर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का नियुक्त होम्योपैथिक नुस्खा निम्नलिखित ढंग से प्रोयोग करने का आदेश फ़रमया तथा फ़रमाया दुआ भी करें की अल्लाह तआला प्रत्येक को अपनी सुरक्षा में रखें। आमीन।

هوالشافی

प्रयोग का ढंग		वृद्ध लोगों के लिए	10 से 15 साल के बच्चों के लिए	10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए	गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए
पहली खुराक		Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पहली खुराक के 7 दिन बाद	दूसरी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
दूसरी खुराक के 7 दिन बाद	तीसरी खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
तीसरी खुराक के 7 दिन बाद	चौथी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
चौथी खुराक के 7 दिन बाद	पाँचवीं खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पाँचवीं खुराक के 7 दिन बाद	छठी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित

चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात

जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें , नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

01872-501130 दफ़्तर , 09682587713,09682627592

E-mail : diwan@qadian.in

★ ★ ★

सज्दे में अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें अपना क़ुरब अता करे

अल्लाह से कहो जो दौलत मैं तुझ से मांग रहा हूँ वह तुम ही हो, मुझे पैसा नहीं चाहिए, मुझे दुनिया नहीं चाहिए, मुझे तेरा क़ुरब चाहिए।

अल्लाह से यह दुआ करो कि जिस वादे के साथ तुम जमाअत अहमदिया में आए हो अल्लाह तआला इस अह्द को पूरा करने की, निभाने की तौफ़ीक़ दे।

और तुम एक अच्छे मुरब्बी और मुबल्लिग़ बन के निकलो और अपनी कौम में तब्लीग़ करके इस क़ौम को अल्लाह तआला के सामने झुकाने वाले बनो

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त 24)

प्रश्न : इस प्रश्न पर कि रोज़े के दौरान यदि किसी महिला को माहवारी शुरू हो जाएं तो उसे रोज़ा खोल लेना चाहिए या उसे रोज़े को मुकम्मल कर लेना चाहिए। तथा जब ये दिन ख़त्म हों तो सेहरी के बाद पाक साफ़ हो सकते हैं या सेहरी से पहले पाक होना आवश्यक है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 30 अप्रैल 2020 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : महिलाओं की इस प्राकृतिक हालत को क़ुरआन-ए-करीम ने أَذًى अर्थात् तकलीफ़ की हालत क़रार दिया है। और इस्लाम ने इस कैफ़ीयत में महिलाओं को प्रत्येक किस्म की इबादात के बजा लाने से रुख़्सत दी है। इसलिए जिस वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएं उसी वक़्त रोज़ा ख़त्म हो जाता है और उन दिनों के पूरी तरह ख़त्म होने पर और मुकम्मल तौर पर पाक होने के बाद ही रोज़े रखे जा सकते हैं। तथा जो रोज़े इन दिनों में (बिशमोल आरंभ और अंत वाले दिन) के छूट जाएं, इन रोज़ों को रमज़ान के बाद किसी वक़्त भी पूरा किया जा सकता है।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के नाम अपने पत्र में हज़रत सोबान रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी एक हदीस कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे एक ख़ज़ाना की ख़ातिर तीन व्यक्ति क़िताल करेंगे (और मारे जाऐंगे) तीनों ख़लीफ़ों (हुकमरान) के बेटे होंगे लेकिन वह ख़ज़ाना उनमें से किसी को भी ना मिलेगा। फिर पूर्व की जानिब से स्याह झंडे नमूदार होंगे वह तुम्हें ऐसा क़तल करेंगे कि इस से क़बल किसी ने ऐसा क़तल नहीं किया होगा। इसके बाद अपने कुछ और बातें भी वर्णन फ़रमाईं जो मुझे याद नहीं, फिर फ़रमाया जब तुम इन (मह्दी) को देखो तो उनकी बैअत करो जबकि तुम्हें बर्फ़ पर घुटनों के बल घिसट कर जाना पड़े। क्योंकि वह ख़लीफ़तुल्लाह और महदी हैं।" दर्ज करके इस के एक हिस्सा की व्याख्या कर के इस के बारे में हुज़ूर की राय दरयाफ़्त की। तथा हदीस के एक हिस्सा के बारे में मज़ीद वज़ाहत चाही। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 30 मई 2020 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाया।

हुज़ूर ने फ़रमाया अपने इस हदीस का हवाला अल् बहर ज़ुख़ार से दर्ज किया है जबकि यह हदीस सहा सित्ता में से सुंन इब्ने माजा किताब अल् फितन बाब ख़ुरूज अल्महदी में भी रिवायत हुई है। हदीस में वर्णन कंज़ और ख़लीफ़ों के बेटों के बारे में आपकी वर्णन करदा व्याख्या एक ज़ौक़ी व्याख्या है।

मेरे ख़्याल में इस में आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मत-ए-मुस्लिमा में आगे ज़माने में नमूदार होने वाले विभिन्न वाक़ियात की ख़बरदी है। जिनमें कुछ वाक़ियात दुनियावी उमूर से सम्बन्ध रखते हैं और कुछ अध्यात्मिक उमूर से सम्बन्ध में हैं। ख़ज़ाने से मुराद जबकि बहुत से उल्मा ने ख़ाना काबा का ख़ज़ाना मुराद लिया है, परन्तु वह ख़ज़ाना तो बहुत से हुकमरानों के हाथ लगा भी है। इसलिए हदीस में वर्णित ख़ज़ाना से मुराद ख़ाना काबा का ख़ज़ाना मुराद नहीं हो सकता क्योंकि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे हैं कि वो ख़ज़ाना उनमें से किसी को नहीं मिलेगा। इसलिए इस से मुराद वह अध्यात्मिक ख़ज़ाना है जिसकी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बाद ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए नबुव्वत के आरंभ की सूरः में बशारत अता फ़रमाई थी। और चूँकि इस ख़ज़ाने को पाने के लिए क़ुरआन-ए-करीम ने सबसे प्रथम शर्त ईमान और अमल-ए-साले क़रार दी है, जो इन दुनियावी हुकमरानों में मफ़क़ूद हो चुकी थी, इसलिए उन्होंने इसके हुसूल के लिए क़िताल अर्थात् जंगें तो बहुत कीं लेकिन किसी के हाथ वह अध्यात्मिक ख़ज़ाना नहीं आया।

इसीलिए इस में आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ज़ाने के लिए क़िताल करने वालों के लिए केवल "इब्ने ख़लीफ़" के शब्द प्रयोग फ़रमाए हैं। अर्थात् वह ख़लीफ़ा बमानी जांनशीन होंगे लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से क़ायम करदा ख़लीफ़ा या नुबुव्वत की बिना पर मिलने वाली ख़िलाफ़त के ताबे ख़लीफ़ा नहीं होंगे। जबकि इसी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस व्यक्ति के लिए जिसे यह ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नबुव्वत का अध्यात्मिक ख़ज़ाना मिलना था "ख़लीफ़तुल अल् महदी" के शब्द प्रयोग फ़रमाए हैं।

इस हदीस में मुसलमानों के क़तल-ओ-ग़ारत का जो वर्णन है, अपने उसके बारे में अपना ख़्याल ज़ाहिर किया है कि वह मह्दी के माध्यम से होगा जो मेरे नज़दीक दरुस्त नहीं है। यदि इस से मुराद ज़ाहेरी क़तल व ग़ारत और ख़ूँरेज़ी ली जाए तो यह मह्दी के माध्यम से कदापि नहीं हो सकती बल्कि इस से मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दूसरी हदीस (मुंदरज मशकातुल मसाबीह) में "مُلْكًا عَاضًّا" और "مُلْكًا جَبْرِيَّةً" के शब्दों में वर्णन भविष्यवाणी के अनुसार, इन प्रत्येक दो अदवार में मुसलमानों की आपस की जंगों में होने वाली ख़ूँरेज़ी और किशत-ओ-ख़ून है। तथा तेरहवीं सदी में मंगोलों के हाथों होने वाली मुसलमानों की क़तल-ओ-ग़ारत मुराद है।

ख़लीफ़तुल अल् महदी के माध्यम से इस क़तल-ओ-ग़ारत के वक़ूअ पज़ीर न होने की एक दलील यह भी कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले मह्दी की एक निशानी "يَضَعُ الْحَرْبَ" अर्थात् वह जंग-ओ-जदाल और कशत-ओ-ख़ून का ख़ातमा कर देगा। (सही बुख़ारी किताबुल् अंबिया-बाब नुज़ूल ईसा) वर्णन फ़रमाई है। अतः यह कैसे हो सकता है कि एक तरफ़ तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आने वाले मह्दी को अमन-ओ-आश्ती का अलमबरदार क़रार दे रहे हों और दूसरी तरफ़ इसी के माध्यम से उम्मत-ए-मुहम्मदिया के लोगों की ऐसी ख़ूँरेज़ी की सूचना दे रहे हों जैसी ख़ूँरेज़ी पहले ज़मानों में कभी किसी ने न की हो?

फिर उस हदीस में रावी का यह वर्णन कि "इस के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ और बातें भी फ़रमाई जो मुझे याद नहीं।" विशेष तवज्जा का मुतहम्मिल है। और बहुत संभव है कि वे उमूर दज्जाल के ज़हूर के बारे में हों क्योंकि असंख्य ऐसी रिवायात कुतुब अहादीस में मौजूद हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दज्जाल के फ़ित्ना को सबसे बड़ा फ़ित्ना क़रार दिया और उसके मुक़ाबले के लिए अपनी उम्मत को मसीह मौऊद की आमद की ख़ुशख़बरी अता फ़रमाई। रावी के अनुसार इन बातों के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम मह्दी अलैहिस्सलाम की आमद का वर्णन फ़रमाया और उनकी बैअत को लाज़िमी क़रार देते हुए ताकीदन फ़रमाया कि यदि तुम्हें बर्फ़ की सिलों से घुटनों के बल घिसट कर भी जाना पड़े तो अवश्य उसकी बैअत करना, क्योंकि वह ख़लीफ़तुल्लाह अल्महदी है अतः हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में तीन अलग-अलग ज़मानों का वर्णन फ़रमाया है। एक वह ज़माना जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का मुबारक दौर हसब मंशा-ए इलाही अंत पज़ीर हो जाएगा। और इसके बाद मुसलमान आपस में जंग-ओ-जदाल करेंगे और अपने ही लोगों को कतल करके उनका ख़ून बहाएँगे, उस वक़्त वे अध्यात्मिक ख़ज़ाने से वंचित हो जाऐंगे। दूसरा वह ज़माना जब मुसलमानों के दुनियावी लिहाज़ से भी कमज़ोर हो जाने की वजह से उनके ग़ैर मुस्लिम मुख़ालेफ़ीन उन्हें ख़ूँरेज़ी का निशाना बनाएंगे और फिर

तीसरा वह जब आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बशारतों के अनुसार इमाम महदी और मसीह मुहम्मदी की बेअसत होगी और उम्मत-ए-मुहम्मदिया का वह हिस्सा जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस ग़ुलाम सादिक़ और अध्यात्मिक फ़र्ज़ंद की बैअत करके उसकी आग़ोश में आ जाएगा, उसके लिए एक मर्तबा फिर उसी तरो ताज़गी का ज़माना आएगा जिसका मुशाहिदा उम्मत-ए-मुहम्मदिया ने अपने आक़ा-ओ-मुता हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहृद मुबारक में किया था और उस वक़्त फिर "सहाबा से मिला जब मुझको पाया" की नवेद इन ख़ुश-नसीबों के लिए पूरी होगी।

हदीस में मुंदरज क़तल-ओ-ग़ारत को यदि इस्तार लिया जाए तो फिर उसके अर्थ ये होंगे कि जिस तरह सही बुख़ारी में "يَضَعَ الْحَرْبَ" वाली हदीस में वर्णित "فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيرَ" का हक़ीक़ी अर्थ सलीब तोड़ना और सिर मारना नहीं। बल्कि इस से मुराद ईसाइयत की तरफ़ से इस्लाम पर होने वाले आरोप का मुंह तोड़ उत्तर देना मुराद है, इसी तरह इमाम महदी के माध्यम से मुसलमानों के क़तल से मुराद उनमें राह पा जाने वाले ग़लत अक़ायद का क़िला क़मा करना और दीन की तजदीद कर उसे आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीमात के ऐन अनुसार दुनिया में रायज करना होगा।

अतः मेरे ख़्याल में यदि इस हदीस को इस तरह लिया जाए तो ज़्यादा बेहतर व्याख्या बनती है और क़तल की भी वज़ाहत हो जाती है।

प्रश्न : एक अरब मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि क्या जमाअत अहमदिया अबाज़िया फ़िर्क़ा की हदीस की किताब "मस्नद अल् रबीअ बिन हबीब" में वर्णन अहादीस को सही समझती और उन पर अमल करती है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 30 मई 2020 में इस इस्तिफ़सार पर निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर: हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में जमाअत अहमदिया का अक़ीदा सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में यह है कि क़ुरआन-ए-करीम और सुन्नत के बाद तीसरा माध्यम हिदायत का हदीस है और वह क़ुरआन की ख़ादिम और सुन्नत की ख़ादिम है। लेकिन जो हदीस क़ुरआन और सुन्नत की नक़ीज़ हो और तथा ऐसी हदीस की नक़ीज़ हो जो क़ुरआन के अनुसार है या ऐसी हदीस हो जो सही बुख़ारी के मुख़ालिफ़ है तो वह हदीस क़बूल के लायक़ नहीं होगी। क्योंकि उसके क़बूल करने से क़ुरआन को और उन समस्त अहादीस को जो क़ुरआन के मुवाफ़िक़ हैं रद्द करना पड़ता है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत का यह कर्तव्य होना चाहिए कि यदि कोई हदीस मुआरिज़ और मुख़ालिफ़ क़ुरआन-ओ-सुन्नत न हो तो ख़ाह कैसे ही अदना दर्जा की हदीस हो इस पर वह अमल करें और इन्सान की बनाई हुई फ़िक़्ह पर उसको प्राथमिकता दें। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ की इत्तिबा करें और अहादीस की जो पैग़ंबर-ए-ख़ुदा से साबित हैं इत्तिबा करें। ज़ईफ़ से ज़ईफ़ हदीस भी इस शर्त के साथ कि वह क़ुरआन शरीफ़ के मुख़ालिफ़ न हो हम उसे वाजिबुल् अमल समझते हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि कोई हदीस नसूस-ए-बय्यिना स्पष्ट रूप में क़ुरआन-ए-करीम से स्पष्ट विपरीत हो गो वह बुख़ारी की हो या मुस्लिम की मैं कदापि उस की ख़ातिर इस तर्ज़ के अर्थ को जिससे मुख़ालेफ़त क़ुरआन लाज़िम आती है क़बूल नहीं करूँगा।

अतः जो भी हदीस मज़कूरा बाला मयार के अनुसार होगी, चाहे वह किसी भी किताब की हो जमाअत अहमदिया के नज़दीक काबिल-ए-क़बूल और स्वीकृत है।

प्रश्न : किसी महिला का अपनी मर्ज़ी से अपना बच्चा अपनी जेठानी को देकर, कई वर्ष बाद दोनों ख़ानदानों में मतभेद की अवस्था पैदा हो जाने पर माँ की तरफ़ से बचा की वापसी के मुतालिबा के बारे में एक पत्र में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में मौसूल हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 24 जून 2020 ई. में इस बारे में निम्नलिखित हिदायात अता फ़रमाई। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : आम दुनयावी वस्तुओं की लेन-देन में जब इन्सान अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से किसी को अपनी चीज़ दे देता है तो फिर उस चीज़ की वापसी के मुतालिबा को पसंदीदगी की नज़र से नहीं देखा जाता। औलाद जबकि इस किस्म की दुनयावी वस्तुओं में तो शुमार नहीं होती लेकिन फिर भी जब कोई व्यक्ति अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से किसी को अपना बच्चा देदे और दूसरा व्यक्ति उसे अपनी औलाद की तरह रखे तो फिर उसकी वापसी का मुतालिबा भी अख़लाक़न पसंदीदा नहीं इसीलिए जमाअती क़ज़ा ने समस्त हालात का जायज़ा लेकर यही निर्णय दिया है कि हक़ीक़ी माँ का अपने बच्चा की वापसी का मुतालिबा दुरुस्त नहीं।

मेरे नज़दीक यदि बच्चा की उमर नौ वर्ष से ज़्यादा है तो अब फ़िक़ही उसूल ख़ियारुल तमीज़ के तहत इस मुआमले का निर्णय होना चाहिए और बच्चे से पूछना चाहिए कि वह किस के पास रहना चाहता है, जहां बच्चा अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से जाने की इच्छा करे बच्चा को वहीं रखा जाए।

अल्लाह तआला आप दोनों ख़ानदानों को अक़्ल और समझाता फ़रमाए, आप ख़ुदा तआला के भय और तक़्वा को मद्द-ए-नज़र रखते हुए केवल उसकी रज़ा की ख़ातिर एक दूसरे के लिए अपने जायज़ हुक़ूक़ छोड़ कर इन झगड़ों को ख़त्म करने वाले हों। आमीन।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ जमामिआ अहमदिया घाना के विद्यार्थियों की virtual नशिस्त तिथि 5 दिसंबर 2020 ई. में एक विद्यार्थी के इस प्रश्न पर कि जो लोग ख़ुदा तआला को नहीं मानते उनको समझाने के लिए सबसे मज़बूत दलील कौन सी है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : बात यह है कि जो लोग ख़ुदा तआला को नहीं मानते वह बात सुनना भी नहीं चाहते। ख़ुदा तआला की ज़ात की मज़बूत दलीलें तो अपना ज़ाती अनुभव है। आप उनको कहें कि तुम कहते हो ख़ुदा नहीं है मैं कहता हूँ ख़ुदा है। मैंने ख़ुदा से मांगा, उसने मुझे दे दिया। आपकी कोई दुआ क़बूल हुई नाँ? अपने कभी दुआ की, आपकी दुआ क़बूल हुई कि नहीं हुई? (विद्यार्थी ने अर्ज़ किया कि जी, जी क़बूल हुई) बस तो जो ख़ुदा को नहीं मानते उनसे कहो कि तुम कहते हो कि ख़ुदा तआला नहीं है। मैं ने तो अल्लाह तआला से मांगा और मुझे अल्लाह तआला ने दिया। मेरा तो अल्लाह तआला की ज़ात में ज़ाती अनुभव है। मैं किस तरह कह दूं कि ख़ुदा तआला नहीं है। हाँ तुम भी यदि कोशिश करोगे तो फिर तुम्हें भी अल्लाह मिल जाएगा। लेकिन ये लोग जो ख़ुदा को नहीं मानते ये लोग बड़े ढीट लोग होते हैं। यहां भी इक्का atheist है जिसका नाम richard dawkins है। वह भी ख़ुदा तआला को नहीं मानता। और उसने ख़ुदा तआला के ख़िलाफ़ किताब भी लिखी है। मैं ने उसको five volume commentary भी भिजवाई और "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" और दूसरी किताबें भी भिजवाईं। और मैंने कहा ये पढ़ो फिर हमसे बात करो, तुम्हें पता लगे कि ख़ुदा क्या है और ख़ुदा का क्या तसव्वुर है। उसने कहा मैंने कुछ नहीं पढ़ना। केवल तुम मेरी किताब पढ़ो, मैं ने तुम्हारी किताबें कोई नहीं पढ़नी। तो ये लोग ढीट होते हैं, और जो ढीट हो जाएं उन्होंने किसी तरह नहीं मानना। हाँ जिनके अंदर थोड़ी सी नेक फ़ित्रत होती है उनसे ज़ाती सम्बन्ध रखो और उनको फिर अपने ज़ाती सम्बन्ध की वजह से ख़ुदा तआला के क़रीब ले के आओ। कई दफ़ा जो अपना क़ुरब है वह भी असर डालता है और दूसरे इन्सान के लिए परिवर्तन का माध्यम बन जाता है। तो ज़ाती अनुभव जो है वह सबसे प्रभावी चीज़ है। यहां मेरे पास भी कई दफ़ा मुलाक़ातें करने वाले, प्रैस वाले कुछ लोग आते हैं। कुछ ने बाद में इज़हार किया कि हम ख़ुदा को तो नहीं मानते लेकिन यदि कभी ख़ुदा को मानता है तो हम तुम्हारे ख़लीफ़ा की वजह से मानेंगे कि उसने हमें ख़ुदा तआला की सही तरह बात बताई है। फिर दिलों को नरम करने के लिए दुआ होनी चाहिए कि अल्लाह तआला दिलों को नरम भी करे। इसलिए अपना ज़ाती नमूना जो है वह बहुत आवश्यक है वह पेश करें और दुआ की स्वीकृति के लिए अपने अनुभव वर्णन करें। सब से ज़्यादा तो यह है कि मेरे साथ अल्लाह का क्या सुलूक है। जब अपने साथ अल्लाह का सुलूक बताएँगे तो वह जो first-hand experience है इस से लोग फिर ज़्यादा impressed होते हैं। बाक़ी दलीलें तो बेशुमार हैं। "हमारा ख़ुदा" है, "हस्ती बारी तआला के दस दलायल" हैं, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की किताब "हस्ती बारी तआला" है। ये सारी किताबें उर्दू में भी और इंग्लिश में भी आगई हैं। ये पढ़ो और उनको भी ये पढ़ने के लिए दो। इसी तरह यदि कोई पढ़ा लिखा आदमी है और वह पढ़ना जानता है तो उस को एक तो "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" पहले दीनी चाहिए, फिर "हस्ती बारी तआला के दस दलायल" हैं वह देनी चाहिए। ये छोटी छोटी किताबें हैं। फिर हज़रत ख़लीफ़ा राबे की किताब revelation rationality है उसका एक chapter जो ख़ुदा तआला की ज़ात पर है वह भी बाज़ों को प्रभावित कर देता है। "हमारा ख़ुदा" की इंग्लिश ट्रांसलेशन हो चुकी है वह देनी चाहिए कि पढ़ो। अब पढ़ने के बाद भी यदि कोई नहीं मानता तो हमारा काम तो केवल संदेश पहुंचाना है, किसी की हिदायत के लिए हम गारंटी नहीं दे सकते। हिदायत की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने अपने सपुर्द ली है। हमारे सपुर्द केवल तब्लीग़ की ज़िम्मेदारी डाली है कि हम तब्लीग़ करें और अल्लाह

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 23 May 2024 Issue No. 21

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

तआला के रस्ता की तरफ़ ले के आएं।

प्रश्न : इसी मुलाकात में एक और विद्यार्थी ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा तआला का क़ुरब हासिल करने का सबसे बेहतरीन माध्यम क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के उत्तर में फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह की इबादत करो। अल्लाह तआला ने बता दिया कि मैंने इन्सान को इबादत के लिए पैदा किया है। وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ और अपनी पैदाइश का जो हक़ है वह अदा करो। पहली बात तो अल्लाह तआला ने फ़रमाई ईमान बिलग़ैब। ईमान बिलग़ैब के बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ नमाज़ें क़ायम करो। अल्लाह तआला का आदेश है नमाज़ क़ायम करो, तो दूसरी अहम चीज़ इबादत है। अल्लाह तआला पर ईमान लाने के बाद नमाज़ों की अदायगी है। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ में इन्सान जब सज्दे की हालत में होता है उस वक़्त वह अल्लाह तआला के सबसे क़रीब होता है। इसलिए सज्दे में अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें अपना क़ुरब अता करे।

जो तुम से मांगता हूँ वह दौलत तुम्ही तो हो अल्लाह से कहो जो दौलत मैं तुझसे मांग रहा हूँ वह तुम ही हो। मुझे पैसा नहीं चाहिए, मुझे दुनिया नहीं चाहिए। मुझे तेरा प्रेम चाहिए और जब तेरा प्रेम मिल जाएगा तो दुनिया की दौलत भी मेरी लौंडी बिन जाएगी, मेरी गुलाम बन जाएगी और दुनिया की सहूलतें भी मेरी गुलाम बन जाएँगी। और मेरी रूहानियत भी बढ़ जाएगी। तो फिर सज्दे में दुआ किया करो कि अल्लाह तआला अपना क़ुरब अता करे। ठीक।

प्रश्न : इसी virtual नशिस्त तिथि 5 दिसंबर 2020 ई. में एक और विद्यार्थी ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि नमाज़ में आनंद कैसे हासिल कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

उत्तर : आनंद कैसे हासिल कर सकते हैं? इस का एक सादा सा तरीक़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह बताया है कि तुम रोने वाली शक्ल बनालो। जब इन्सान ज़ाहेरी तौर पर अपनी शक्ल बनाता है तो जैसी हालत तारी करने की कोशिश करता है दिल की भावनाएं भी फिर वैसे होने शुरू हो जाती हैं। जब सूरः फ़ातेहा पढ़ रहे हो तो إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ को बार-बार दोहराओ और ग़ौर करो और रोने वाली शक्ल बनाते जाओ तो एक वक़्त में तुम्हें रोना आजाएगा। जब तुम्हें रोना आएगा, जब दिल पर रिक़्क़त तारी होगी, नरमी पैदा होगी तो फिर तुम्हें इस में एक लज़्ज़त आनी शुरू होगी। फिर जब तुम रुकू में जाओगे, फिर तुम दुआ पढ़ोगे फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। फिर समे अल्लाहु कहोगे तो फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। सज्दे में जाओगे फिर बेचैनी से तड़पोगे, फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। तो उसी शक्ल को अपने आप पर तारी करना पड़ेगा। एक मुजाहिदा है, एक कोशिश है, वह कोशिश करोगे तो फिर लज़्ज़त पैदा होती जाएगी। और जब एक दफ़ा लज़्ज़त आजाएगी तो फिर तुम्हें मज़ा आता रहेगा। प्रत्येक दफ़ा ही तुम कोशिश करोगे कि मैं नमाज़ में अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हूँ और रोऊँ तो मुझे मज़ा आए, मुझे लुतफ़ आए और जो अल्लाह के आगे सजदा में रोने का मज़ा आता है नाँ वह प्रत्येक मज़ा से बहुत बढ़ के होता है। ठीक है? और अल्लाह से यह दुआ करो कि जिस अह्द के साथ तुम जमाअत अहमदिया में आए हो अल्लाह तआला इस अह्द को पूरा करने की, निभाने की तौफ़ीक़ दे। और तुम एक अच्छे मुरब्बी और मुबल्लिग़ बन के निकलो और अपनी कौम में तब्लीग़ करके इस क़ौम को अल्लाह तआला के सामने झुकाने वाले बनो। और फिर उनमें से भी वे लोग पैदा हों जिनको इबादतों में लज़्ज़त आए।

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़्ल इंटरनैशनल 3 दिसंबर 2021)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

गए उसका असल उद्देश्य यह था कि वह बड़े हो कर बैतुल्लाह की हिफ़ाज़त और दीन-ए--इब्राहीमी की ख़िदमत करें। और उनके द्वारा वह औलाद पैदा हो जिसके हाथों ख़ुदा तआला अपने दीन का आख़री दौर क़ायम करना चाहता था। अतः वास्तव में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को जिस दिन बैतुल्लाह के पास छोड़ा गया उस दिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद का ऐलान किया गया क्योंकि बैतुल्लाह ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में ही अल्लाह तआला के वर्णन का आख़िरी घर होना था और इस की तैयारी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के ज़माना ही से शुरू कर दी गई। दुनिया में जब भी कोई बड़ा काम होने लगता है तो पहले से इस की तैयारी शुरू कर दी जाती है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चूँकि मक्का में ज़हूर मुक़द्दर था इसलिए अल्लाह तआला ने इसके मुताल्लिक़ दो हज़ार साल पहले हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के माध्यम से तैयारी शुरू कर दी। यह कितना अहम मुक़ाम है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हासिल है कि दो हज़ार साल पहले अल्लाह तआला हज़रत इब्राहीम आ और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को हुक्म देता है कि मेरे इस घर को साफ़ करो, क्योंकि यहां मेरा वह नबी आने वाला है जिसके नूर से सारी दुनिया मुनव्वर होगी इसलिए फ़रमाया : طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِيْنَ وَالْقَائِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ तुम मेरे इस घर को उन लोगों के लिए तैयार करो जो तवाफ़ करने के लिए यहां आएँगे। जो क़ियाम करने के लिए यहां आएँगे और जो यहां आकर रुकवा और सजदा करेंगे। परंतु हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के ज़माना में और इसके बाद कितने लोग थे जो इस नीयत के साथ वहां आया करते थे। तवाफ़ तो लोग करते ही थे परंतु कितने लोग थे जो वहां जा कर अपनी उमरें ख़ुदा तआला के दीन की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर देते थे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना से पहले सैंकड़ों वर्ष की तारीख़ महफ़ूज़ है, परंतु वह तारीख़ ही बताती है कि उस वक़्त वहां बुतपरस्ती ही बुतपरस्ती थी। न ख़ुदा के लिए कोई एतिकाफ़ बैठने वाला था। न ख़ुदा के लिए कोई क़ियाम करने वाला था। न ख़ुदा के लिए वहां रुकू होता था और न ख़ुदा के लिए वहां सजदा होता था बल्कि जो लोग ख़ुदा तआला के नाम को बुलंद करते उन्हें मारा और पीटा जाता था। अतः ये बातें जो वर्णन की गई हैं कि मेरे इस घर को तैयार करो ताकि तवाफ़ करने वाले क़ियाम करने वाले और कामिल रुकू और कामिल सजदा करने वाले यहां आएं, यह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में ही होने वाली थीं। और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को इसी तैयारी के लिए निर्धारित किया गया था। बाक़ी रहा यह सवाल कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने फिर क्या काम किया? इसका जवाब यह है कि उन्होंने ज़ाहिरी रंग में काअबा की तामीर की। इसी तरह उन्ही के द्वारा ख़ुदा तआला ने ज़मज़म निकलवाया। बाद में जो ख़राबियां नज़र आती हैं उनकी वजह से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पर एतराज़ नहीं हो सकता। असल ग़ौर करने वाली बात यह है कि जबकि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने जिन लोगों को अपने बाद छोड़ा उन में से बहुत से मुशरिक और बुत परसत हो गए। परंतु क्या दुनिया का कोई व्यक्ति इस अमर से इंकार कर सकता है कि दीन को फैलाने की क़ाबिलीयत उन्ही लोगों के अंदर थी। मक्का वालों ने बे-शक इस्लाम की मुख़ालिफ़त की। क़ुरैश ने बे-शक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुख़ालेफ़त की और शदीद मुख़ालेफ़त की बल्कि अबुजहल को पेश करके कोई व्यक्ति कह सकता है कि जिस क़ौम में अबुजहल जैसे लोग पैदा होने वाले थे क्या उसके मुताल्लिक़ यह भविष्यवाणी की गई थी طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِيْنَ وَالْقَائِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ कि मेरे इस घर को कामिल तवाफ़ करने वालों और कामिल क़ियाम करने वालों और कामिल रुकू और सुजूद करने वालों के लिए तैयार करो? मैं उसे कहूंगा कि हे नादान : तुझे अबुजहल तो नज़र आगया जिसका काम ख़त्म हो गया परंतु तुझे अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो नज़र नहीं आया जिसका काम आज तक जारी है। तुझे उत्बा और शीबा तो नज़र आगए जो पैदा हो कर फ़ना हो गए परंतु तुझे उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और अली रज़ियल्लाहु अन्हो नज़र नहीं आए जिनको दाइमी हयात बख़शी गई है और जिनके कारनामे क़ियामत तक दुनिया से मिट नहीं सकते। अतः बे-शक वे लोग ख़राब हो गए थे परंतु उनकी यह ख़राबी ऐसी ही थी जैसे कोट पर मिट्टी पड़ जाए। या वह हीरा तो थे परंतु तराशा हुआ हीरा नहीं थे। जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तवज्जा और आपकी क़ुव्वत-ए-क़ुदसिया की बरकत से वह तराशे गए तो वही हीरे दुनिया की बेहतरीन चीज़ शुमार होने लगे। इसलिए अबुजहल अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो के रूप में, आसी और आवाल अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की सूरत में, वलीद ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की सूरत में, और अबू सुफ़ियान, मुआविया और यज़ीद इब्न अबू-सुफ़ियान की सूरत में ज़ाहिर हुआ। जब तक सोने के ज़र्रात मिट्टी में मिले हुए होते हैं उनकी कोई क़दर-ओ-क़ीमत नहीं होती परंतु जब किसी माहिर की निगाह उन पर पड़ती है तो वह इन ज़र्रात को मिट्टी से अलग कर लेता है और फिर वही ज़र्रात बहुत बड़ी क़ीमत पर फ़रोख़्त होते हैं। इसी तरह हीरा जब तक पत्थर में रहता है इस की क़दर-ओ-क़ीमत का किसी को एहसास नहीं होता। परंतु जब कोई माहिर उसे काट कर हीरे को अपनी असल शक्ल में दुनिया के सामने पेश करता है तो इस की क़ीमत लाखों बल्कि करोड़ों रुपया तक पहुंच जाती है।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 नंबर 25 से 27)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad